आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 1/अंक 2/दिसंबर 2021

Received : 02\12\2021;Accepted:08\12\2021;Published:24\12\2021

धर्मवीर भारती काव्य सृजन: एक समीक्षा

दीपाली.डी.मिरेकर

शोधार्थी

हिन्दी विभाग

कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी

महिला विश्वविद्यालय, विजयपुर- 08

Email.ID: deepalimirekar3@gmail.com

दीपाली.डी.मिरेक **धर्मवीर भारती काव्य सृजन: एक समीक्षा**,आखर हिंदी पत्रिका, खंड 1/अंक /2दिसंबर ,2021(153-157)

प्रस्तावना

'गुनाहों का देवता' उपन्यास इनकी सदाबहार रचना मानी गयी है। हिन्दी साहित्य धारा में धर्मवीर भारती का स्थान विशेषणीय है। इनके काव्य सृजन का श्रीगणेश 'दूसरे तार सप्तक' से हुआ। साहित्य धारा के विभिन्न विधाओं में इनका साहित्य मिलता है। धर्मवीर भारती काव्य को विश्वास की ध्वनि और शांति की परछाई से परिभाषित करते थे। बौद्धिकता प्रधान अव्यवस्थित और अराजकतापूर्ण समाज को दर्पण दिखाने का कार्य इनके काव्य द्वारा हुआ।

इनको 1972 में पद्मश्री पुरस्कार प्रदान किया गया। भारती जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। इनके काव्य धारा में रागतत्व की सुंदर अभिव्यक्ति मिलती है। 'अंधायुग' इनकी प्रमुख काव्य रचना है। पौराणिक यथार्थ के पृष्ठभूमि पर नव युग को जागृत करने का कार्य इस काव्य सृजन द्वारा हुआ है। महाभारत युद्ध पर आधारित यह काव्यात्मक नाटक नव युगीन समाज की कुंठा, अनीति, भ्रष्टाचार, पाप, अधर्म, युद्ध परक विनाशकारी मनोवृत्ति, कुंठा आदि के प्रतिफल रूपी विनाशी भविष्य की ओर संकेतित है। 'अंधायुग' इनका सुप्रसिद्ध नाटक है।

महाभारत युग विभिन्न समस्याओं से ग्रस्त रहा है। आधुनिक युगीन स्थिति भी इससे भिन्न नहीं है। अंधायुग विनाश का सुत्रधार बनता है। अंधायुग काव्य नाटक का मूल्यांकन करते हुए डॉ.सुरेशचंद्र गुप्त कहते हैं- "इस भाव प्रधान काव्यात्मक नाटक में इतिहास की चेतना और वैयक्तिक चेतना का अपूर्व समीकरण मिलता है। जो एक ओर रागात्मक मनोवेगों, कल्पना वातावरण के प्रति जागरूकता और गंभीर जीवन दर्शन

का परिणाम है और दूसरी और चित्रभाषा, भौतिक बिम्ब-विधि-विधान और आधुनिकता के संस्पर्श से युक्त प्रतीकों की देन है। परंपरागत भारतीय संस्कृति और वैष्णव भावना में ही न खोकर कवि ने इससे अन्तर्जगत् और बहिर्जगत् सूक्ष्म विश्लेषणपूर्वक नये भाव बोध को स्थान दिया है।"[1]

'अंधायुग' में प्रस्तुत समाज का प्रतिबिंब मिलता है। राजनीतिक अराजकता, अंध समाज व्यवस्था, शोषण, पीड़ा, अहं, अर्थ और अधिकार दाह, मानवीय संबंधों में विघटन। पारिवारिक विघटन, नारी, शोषण आदि विभिन्न दुष्कर्मों का सजग चित्रण 'अंधायुग' काव्य नाटक में यथावत हुआ है। 'अंधायुग' नाटक प्रस्तुत समाज को भविष्यगत भयावह जटिल परिस्थितियों से अवगत करवाता है। धर्मवीर भारती की मान्यताएँ विशादजन्य होते हुए भी स्वीकार्य यथार्थ है।

महाभारत युद्ध के परिणाम स्वरूप नरसंहार, विनाश, भ्रष्टाचार, शोषण, अत्याचार, अर्थ और अधिकार दाह आदि अपनी चरमसीमा पार कर चुके थे। नारी शोषण के विभिन्न रूप प्रस्तुत समाज में भी फन फैलाये है। विधवा पीड़ा, युवापीढ़ी संघर्ष, जाति-कुल पद्धति, राजनीतिक कूटनीतियाँ, सामान्य जनता का आक्रंदन, शोषण, भ्रष्टता, महत्वाकांक्षा, नारी विभिन्न रूपी संघर्ष प्रसक्त समाज के भी लक्षण है। जीवन दर्शन, आध्यात्म, संस्कृति, आदर्शवादी जीवन शैली, मानवीयता, धर्म-कर्म प्रधानता आदि समाजोद्धारक तत्वों के पतनीय रूप अंध समाज के अविभाज्य अंग है। यांत्रिकता के दौड में जीवन के मूल स्वरों से पलायन करता मानव अंधकारमय पथ पर अग्रसर है। पूँजीवादी व्यवस्था ने समाज में अराजकता पैदा की है।

धर्मवीर भारती ने 'अंधायुग' के माध्यम से पथभ्रष्ट समाज को नव दृष्टिकोणनात्मक आयामों द्वारा जागृत करने का प्रयास किया है। महाभारत युग से प्रसक्त युग तक अंधायुग अपने जड़े फैलाये दैत्यरूपी विस्तार करते आया है। साँझ के बादल, गुनाह का गीत, फागुन की शाम, आँगन, टूटा पहिया, एक वाक्य, ठंडा लोहा, साबूत आईने, अँजुरी भर धूप, कविता की मौत, सात गीत वर्ष आदि कविता संग्रह में जनमानस का संघर्ष, भ्रष्ट नवनीति, असमानता, बेरोजगारी, अर्थ विषमता, राजनीतिक दावपेंच आदि चित्रित है। सामाजिक अराजकता और अव्यवस्था के परिणाम स्वरूप खिन्नता, छुटन, निराशा मानसिक तडफडाहट आदि प्रस्तुत जनजीवन की परिभाषा में सम्मिलित अंश है। जीवन के आरंभ से लेकर अंत तक मनुकुल अग्नि के कुंड में तपता रहता है।

"काली ठंडी चट्टानों पर

उदास बैठा

मैं सोच रहा था

क्या हुआ मुझे

मेरी पलकों पर स्वप्न नहीं

मकड़ी का भूरा जाला है

अकसर जीवन का सत्य द्वार मेरे आया और लौट गया

उससे बढ़कर

अब यह मेरा खोखला हृदय

धीरे-धीरे है भूल रहा।"[2] - (ठंडा लोहा)

अकाल, भूखमरी, महँगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, वर्गभेद, मान-मर्यादा की खोखली शानो-शौकात, मानसिक उथल-पुथल आदि विडंबनापूर्ण स्थितियों का शिकार मध्यमवर्ग बनता आया है। मध्यवर्गीय जन-जीवन का दर्पण कविताओं में मिलता है। इनके साहित्यधारा में पीड़ित सामान्य जनता की जीवंत तस्वीरें मिलती है।

'सात गीत वर्ष' कविता संग्रह इनके साहित्य सृजन श्रृंखला मे विशिष्टता रखता है। जिन काव्यधाराओं द्वारा भारती जी को साहित्य क्षेत्र में विशेष स्थान मिला वह रचनाएँ इस संग्रह में सम्मिलित है। विवश और पराजित मन में विश्वास और भक्ति का दिया जलाने का कार्य इस कविता संग्रह द्वारा हुआ है। आशा की एक ज्योति से नव उल्लास के साथ पीड़त्मक जीवन का पथ प्रशस्त करने का सकारात्मक संदेश कविताओं के द्वारा हुआ है। धर्मवीर जी ने आधुनिक अराजकतापूर्ण व्यवस्था पर व्यंग्यात्मक रूप में पोस्टमार्टम करने का साहस किया है। इस संदर्भ को उनकी कविता में देख सकते हैं-

"सतह

पर मैं जी रहा हूँ निडर

जैसे कमल

जैसे पंथ

जैसे सूर्य

क्योंकि कल भी हम खिलेंगे

हम चलेंगे

हम उगेंगे

और वे सब हाथ होंगे

आज जिनको रात ने भटका दिया है।"[3]

इनके साहित्यधारा में विभिन्न समस्याओं में संघर्षरत पात्र प्रस्तुत जनमानस का प्रतिनिधित्व करते है। इनका साहित्य सृजन सामान्य जनता की विवशता, तडप, कष्ट संघर्षों और वेदनाओं की पुकार बनता है। इनके साहित्य ने प्रजातंत्र व्यवस्था में पूँजावादी तंत्रमयता को प्रतिबंबित किया है।

युद्धकालीन विनाश मनुकुल समाज को नरक की अनुभूति करवाता है। युग परिवर्तन के पश्चात् प्रसक्त वैज्ञानिक आविष्कारिक युग में भी प्राचीन अनिष्ठ पद्धतियाँ, अव्यवस्था. मनोविकारी भावनाएँ क्रमशः

बढ़ती ही रही है। भारतीय समाज ने महाभारत युद्ध कालीन विभिन्न् विनाशी रूपों को देखा है। परंतु विनाशी तत्वों के पतन हेतु कोई सुमार्ग नहीं अपना पाया है। महाभारत कालीन व्यवस्था को उत्तराधिकारी के पक्ष में स्वीकारते हुए आगे बढ़ता रहा है। 'विनाश काले विपरीत बुद्धि' वाक्य महाभारत के साथ प्रस्तुत युग को भी परिभाषित करता है।

"युद्धोपरांत

यह अंधायुग अवतरित हुआ

जिसमें स्थितियाँ, मनोवृत्तियाँ, आत्माएँ सब विकृत है

यह कथा उन्हीं अंधों की है

या कथा ज्योति की है अंधों के माध्यम से।"[4]

इस काव्य नाटक का प्रकाशन सन्1955 में हुआ था। यह गीतिनाट्य काव्य है। अश्वत्थामा, कर्ण, कृष्ण आदि पात्र युवा पीढ़ी, पीड़ा और संघर्ष की ओर संकेतित है। यह महाभारत युद्ध के अठारहवें दिन से श्रीकृष्ण मृत्यु के अंत तक चित्रित है।

अंधायुग की अंधनीतियाँ समाज को अंधकार में ढकेलती है। महाभारत में चित्रित प्रत्येक पात्र आधुनिक युगीन मानव जीवन का प्रतिनिधित्व करता है। विनाशकारी अंध व्यवस्था और मनोवृत्ति प्रसक्त समकालीन समाज से भी अछूती नहीं है। नव मानव मिथ्या महत्वकांक्षी मनोवृत्ति के परिणाम स्वरूप जीवन के मूल तत्वों से मुँह मोडता है। द्वंद्वात्मक विडंबनापूर्ण स्थिति में पाप का भागीदारी बनता है। अंध राजनीतिक दावपेंचों के चक्रव्यूह में पिसती सामान्य जनता जीवन पर्यंत संघर्षों की पात्रधारी बनती है।

आधुनिक युगीन अंध व्यवस्था ने समाज को दिशाविहीन बनाया है। धर्मवीर भारती का 'अंधायुग' गीतिनाट्य इस दिशा में यथार्थपूर्ण है। भूतकाल और भविष्यकाल को परस्पर जोडने का कार्य और जागृति की मोहिम इस काव्य से हुई है।

राजनीतिक पारिवारिक कलह राज्य विनाश कारणीभूत बनता है। रामायण कालीन मूल्य प्रधानता, पारिवारिक एकता, प्रेम, समर्पण, मजबूत रिश्तों की डोर, भावप्रधानता, धर्म-कर्म निर्वहण परक मनोवृत्ति, शुद्ध आचरण नीति, सूसज्जित सामाजिक व्यवस्था आदि महाभारत युग में विपरीत दिशा से बहते है। धर्मवीर भारती के अनुसार महाभारत युद्ध का अंत नव अंधयुग का आरंभ है।

निष्कर्षतः नयी कविताओं के बौद्धिकता प्रधान पक्ष को भावनात्मक प्रभावी शिल्प के पक्ष में उतारने का कार्य भारती द्वारा हुआ है। इनके काव्य साहित्य में मनोवेदनाओं का हृदयस्पर्शी वर्णन, करूणा और जागृति की सशक्त मशाल निहित है। जीवन संघर्षों की साहित्यिक अभिव्यंजना श्लाघनीय है। अंधकारमय समाज के प्रति इनकी आत्मपीड़ात्मकता और जागृति परक साहित्य विशेषणीय रहा है। समाज में व्याप्त विसंगतियों औक कुरीतियों का यथार्थपरक चित्रण किया है। इनकी संवेदनशील भाव अभिव्यक्ति कौशल्यमय जागृति की नव मशाल लिये आगे बढ़ती है। युगीन विकृतियाँ भविष्यगत विनाश की ओर संकेतित है। लोकमंगलमय इनका साहित्य चेतनशील है। सामाजिक विषमता के जागरूक रूप चित्रित है।

संदर्भ ग्रंथ

[1]. हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि- प्रो.राठौड बाळु, पृ.सं.186
[2]. हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिध कवि- प्रो. राठौड बाळु, पृ.सं.187
[3]. हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि- प्रो.राठौड बाशु, पृ.सं.187
[4]. हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि- प्रो.राठौड बाशु, पृ.सं.186

****